रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED NO. D-221

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 14] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 6, 1968 (चैत्र 17, 1890)

No. 14] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 6, 1968 (CHAITRA 17, 1890)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस

NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 18 मार्च 1968 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 18th March 1968 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subjects
45.	No. 5-ETC(PN)/68, dated 18-3-1968.	Ministry of Commerce.	Export of Tent and Tent cloth.
46.	No. 42-ITC(PN)/68, dated 18-3-1968.	-Do-	Conditions for licensing of private sector Imports under the seventh year credit (Non-Project Aid.)

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazette Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these *Gazettes*.

विषय सूची (CONTENTS)

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	283
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	357

CENTRAL SECRETARIAT
D-8823
22 MAR 1968

	पृष्ठ
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	21
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . .	271
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों सम्बन्धी प्रवर समितियों की रिपोर्ट . .	—
भाग II—खंड 3—उप-खंड (1)—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . . .	699
भाग II—खंड 3—उप-खंड (2)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . . .	1763
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश . . .	137
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ-लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	269
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें .	121
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं .	47
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिन में अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं .	133
भाग IV —गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें .	61
पूरक संख्या 14—	
30 मार्च 1968 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी सम्बन्धी साप्ताहिक रिपोर्ट .	541
9 मार्च 1968 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से सम्बन्धित आंकड़े	

	Page
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	283
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	357
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	21
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence ..	271
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules, (including orders, bye-laws, etc., of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministries of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	699
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	1763
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	137
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	269
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	121
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	47
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	133
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	61
SUPPLEMENT No. 14—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 30 March 1968	541
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 9th March 1968	

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1968

सं० 20–प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको "परम विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

लेफ्टिनेंट जनरल अमरेन्द्र कृष्ण देव (एम० आर०—135), मेडिकल ।

मेजर जनरल सत्य पाल वोहरा (आई० सी० –609), ई० एम० ई० ।

रियर एडमिरल सौरेन्द्र नाथ कोहली, इण्डियन नेवी ।

एयर वाइस मार्शल शिवदेव सिंह (1595), जी० डी० (पी०) ।

एयर वाइस मार्शल ओम प्रकाश मेहरा (1639), जी० डी० (पी०)।

सं० 21–प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको "अति विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

सर्जन कमोडोर हरचरन लाल भाटिया, एम० सी०, इंडियन नेवी ।

एयर कमोडोर मधुकर मल्लाप्पाह श्रीनागेश (1665), मेडिकल ।

एयर कमोडोर चमन लाल मेहता (1630), ए० एण्ड एस० डी० ।

एयर कमोडोर मधुकर लक्षमन अकुट (1752), जी० डी० (एन०) ।

एयर कमोडोर चरनदास गुरुदास देशाणर (1867), जी० डी० (पी०) ।

कप्तान होमी दिनशा कपाडिया, इंडियन नेवी।

लेफ्टिनेंट कर्नल राम प्रकाश गौतम (आई० सी०–6357), डोगरा ।

कमांडर बैनीडिक्ट लोबो, इंडियन नेवी ।

सर्जन कमांडर अकुस जयचन्द्रन, इंडियन नेवी ।

कमांडर अप्पूस्वामी कृष्णा मूर्थी (ई), इंडियन नेवी)

ऐक्टिंग कमांडर कोटाइल ननूकुट्टन नायर, इंडियन नेवी ।

सं० 22–प्रेज/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित उच्च कोटि की विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको "विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

कर्नल एडवर्ड डि० सा० (आई० सी०–3122), इंजीनियर्स ।

विंग कमांडर गनेन्द्र मुखर्जी (3781), टेक्निकल इंजीनियर।

मेजर बख्शी कृष्ण नाथ छिब्बर (आई० सी० –8155), गोरखा राईफल्स ।

मेजर नूरानी हरिहरा अय्यर नारायण (आई० सी०–6884), मद्रास ।

लेफ्टिनेंट कमांडर शेन्कोट्टाह वैंकटेश्वर महादेवन, इण्डियन नेवी ।

स्क्वाड्रन लीडर सुब्बिया मुरुगन (5252), टेक्निकल सिगनल्स ।

स्क्वाड्रन लीडर चित्तिलमचेरी पाथीइल करुनाकरन मैनन, (5350), टेक्निकल सिगनल्स ।

कप्तान परमात्मा चन्द मुरलीमनोहरमल मेहता (एम० 30550), ए० एम० सी० ।

लेफ्टिनेंट सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, इंडियन नेवी ।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट अरविन्द रुतुपरना वैद्य (6581), टेक्निकल/आर्मामेंट ।

जे० सी० 31092 सूबेदार मेजर महेश चन्द, इंटैलिजेंस कोर ।

चीफ पैटी अफसर कुझिमत्तिल कलाथिल मोहम्मद, टेली-ग्राफिस्ट (ओ नं० 29586)।

जे० सी० 13608 सूबेदार मोहीदीन शरीफ, ए० एस० सी ।

3517 फ्लाइट सार्जेंट पिशोरी लाल, इलेक्ट I ।

25871 फ्लाइट सार्जेंट जैकब जौन, फिटर I ।

203471 सार्जेंट ज्योतिरमय नियोगी, एफ II ए ।

204631 सार्जेंट बलदेव सिंह प्लाहा, एफ II ई ।

209057 सार्जेंट टीपूवनामलाई श्रीनिवासी गोपालकृष्ण, इलेक्ट्रीकल I ।

400407 सार्जेंट रामकृष्ण जानकीराम गोसावी, फिट ए ।

सं० 23-प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी उत्कृष्ट वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

1. लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह (आई० सी०-5086), ग्रेनेडियर्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर 1967)

20 अगस्त 1967 को जब लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह नाथूला में बाहरी सीमा चौकी पर एक यूनिट की कमान कर रहे थे तो उत्तरी किनारे पर चीनियों की पहली घुसपैठ के बाद उन्हें आदेश हुआ कि वह नाथूला में पनघारा के साथ-साथ तार की बाड़ लगायें। चीनियों के प्रबल प्रतिरोध और बल प्रयोग के बावजूद उन्होंने सौंपे गए कार्य को कुशलता पूर्वक पूरा किया। 7 सितम्बर, 1967 को उन्हें आदेश दिया गया कि वह तार की बाड़ को पनघारा के साथ उत्तरी किनारे से दक्षिणी किनारे तक बढ़ायें। इस बार चीनी सैनिकों ने कुछ गोलियां भी चलाई । उन्होंने बैनटों और राइफलों की बटों का खुल कर प्रयोग किया तथा झड़प में लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह जख्मी हो गए । उन्होंने दिलेरी से अपने कार्य को कुशलतापूर्वक पूरा किया । तार की बाड़ की परवाह किये बिना चीनी सैनिकों ने भारतीय सीमा का उल्लंघन जारी रखा। 11 सितम्बर 1967 को 0530 बजे जब लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह तथा उनके साथी सीमा उल्लंघन को बन्द करने के लिए तार की बाड़ को मजबूत कर रहे थे तो चीनी सैनिकों ने अचानक आर्टिलरी, मार्टरों तथा रिकायललैस गनों से गोलाबारी आरम्भ कर दी । लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह की कमान में जवानों ने प्राप्त सभी हथियारों से जबाबी हमला किया । उन्होंने स्वयं चीनी बंकरों पर एल० एम० जी० से गोलीबारी की और आवरक गोलियां चलाई ताकि अपने जवान तारों के पास से वापस आ सकें। जब उनका बंकर नष्ट हो गया तो वह बाहर खुले में आ गये। उन्होंने देखा कि एक सिपाही जिसके पास एक स्ट्रिम ग्रेनेड था जख्मी हो गया है तथा गोली चलाने में असमर्थ है। लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह ने उसका हथियार उठा लिया और चीनी सैनिकों पर गोली चलाना आरम्भ कर दिया । जब उन्होंने देखा कि एक माउंटिंग मशीन गन पर चीनी सैनिकों द्वारा गोलाबारी की जा रही है और क्रियू कमांडर मारा गया है तो उन्होंने तुरन्त उस गन का कार्य सम्भाल लिया । उन्होंने कुछ ही गोले चलाये थे कि उनके पेट में गोली लगी और वे वहीं पर गिर गये । यद्यपि उन्हें उस स्थान से उठाते-उठाते एक टुकड़ा फिर उनके सिर के पिछले भाग में लगा फिर भी वह आदेश देते रहे और जवानों को लड़ते रहने के लिए उत्साहित करते रहे ।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल राय सिंह ने उत्कृष्ट वीरता तथा उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया ।

2. मेजर हरभजन सिंह (आई० सी०-14655), राजपूत । **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर 1967)

11 सितम्बर 1967 को 0540 बजे मेजर हरभजन सिंह एक कम्पनी की कमान कर रहे थे जिसे नाथुला में उत्तरी किनारे पर तार की बाड़ को लगाने वाले इंजीनियरों की रक्षा के लिए तैनात किया गया था। जब तार लगाये जा रहे थे तो चीनियों के साथ झड़प हो गई। एकाएक चीनी सैनिकों ने सामने तथा दोनों पार्श्वों से गोलाबारी आरम्भ कर दी । यह अनुभव करके कि उनकी कम्पनी तथा इंजीनियर खुले मैदान में घिर गये हैं, मेजर हरभजन सिंह हमला करने वालों पर धावा बोलने के लिए चिल्लाये । तीन चीनी सैनिकों को बैनट से मार कर वह आगे बढ़े एक हथगोले को फेंक कर चीनी एल० एम० जी० को शान्त कर दिया जो खुले में खड़े हमारे सैनिकों पर गोली बरसा रही थी। ऐसा करने में उन्होंने अपने जीवन का महान बलिदान किया ।

इस कार्यवाही में मेजर हरभजन सिंह ने उत्कृष्ट वीरता तथा उच्च कोटि के निश्चय का परिचय दिया ।

सं० 24-प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

231479 कारपोरल सुकुमार घोष,
सेफ्टी इक्वीपमेंट वर्कर-II ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 नवम्बर 1966)

9 नवम्बर 1966 को करीब 1030 बजे एक सांग्रामिक लड़ाकू प्रशिक्षण वायुयान जिस में 2 चालक थे, एक अग्रिम हवाई मैदान में आपाती अवतरण करते समय ध्वस्त हो गया और उसमें आग लग गई । कारपोरल सुकुमार घोष जो उस समय विसर्जन क्षेत्र में कार्य कर रहे थे, वायुयान की ओर दौड़े। जब वह घटनास्थल पर पहुंचें तो आग काफी फैल चुकी थी । अपनी सुरक्षा की परवाह न कर उन्होंने सर्वप्रथम जलते हुए पिछले काकपिट से जख्मी चालक को निकाला। उसके बाद वह अगले काकपिट पर गये और एक एयरमैन की सहायता से अर्ध-अचेत चालक की पेटियां खोलीं और उसे एक काकपिट से बाहर निकाला। इसके बाद वह जलते हुए वायुयान से पैराशूटों को निकालने के लिए अगले काकपिट पर फिर गए। इस समय तक पिछला काकपिट लपटों से पूर्णतया घिर गया था। इसके बावजूद वह अगले काकपिट में पैराशूटों को निकालने के लिए दुबारा घुसे। उन्होंने केवल उस समय अनिच्छा के साथ आगे प्रयत्न करना समाप्त किया जब घटनास्थल पर उपस्थित उनके अफसरों ने उन्हें वैसा करने से मना किया।

इस सारी कार्यवाही में कारपोरल सुकुमार घोष ने अनुकरणीय साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया ।

सं० 25-प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

1. कप्तान पृथी सिंह डागर (ई० सी०-55355), ग्रेनेडियर्स । **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1967)

11 सितम्बर 1967 को 0530 बजे कप्तान पृथी सिंह डागर को नाथूला में दक्षिणी किनारे के सामने तार लगाने वाली पार्टी को सबल बनाने के लिए भेजी गई पार्टी का प्रभारी तैनात किया गया था । जैसे ही कार्य आरम्भ हुआ उनकी पार्टी तथा चीनियों में झड़प हो गई, किन्तु निर्भीकता से उन्होंने अपने कार्य

को चालू रखा । चीनी सैनिकों ने गोलाबारी आरम्भ कर दी जिससे वह दाहिने हाथ में एक गोली लगने से जख्मी हो गये । जख्मी होने के बावजूद तथा हमलावर सैनिकों द्वारा एम० एम० जी० की गोलाबारी के सम्मुख उन्होंने एक मृत साथी की राईफल से दो चीनी सैनिक मार दिये । सभी प्रयत्नों के बावजूद चीनी एम० एम जी० शान्त न की जा सकी । सीधे हमले के अलावा कोई दूसरा रास्ता न देख वह आगे बढ़े और एम० एम० जी० पर हमला किया । इस कार्यवाही में उन्हों ने अपने जीवन का बलिदान किया ।

इस कार्यवाही में कप्तान पृथी सिंह डागर ने अनुकरणीय साहस तथा उच्चकोटि के नेतृत्व का परिचय दिया ।

2. 2643527 हवलदार लखमी चन्द, ग्रेनेडियर्स ।
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1967)

हवलदार लखमी चन्द 11 सितम्बर 1967 की प्रातः को नाथूला में दक्षिणी किनारे पर एक ब्राउनिंग मशीन गन सेक्शन की कमान कर रहे थे जब वहां पर चीनी सैनिकों से मुठभेड़ हुई । चीनी सैनिकों की गोलाबारी के तुरन्त बाद एक शैल ब्राउनिंग मशीन गन टुकड़ी पर गिरा जिससे हवलदार लखमी चन्द समेत सभी लोग जख्मी हो गये । दाहिने कन्धे से अधिकाधिक खून बहने पर भी वह ब्राउनिंग मशीन गन को एक खुले पार्श्व में ले आये तथा चीनी सैनिकों पर उस समय तक गोलाबारी करते रहे जब तक चीनी मीडियम मशीन गन की एक गोली सिर में लगने से उनकी घटना-स्थल पर मृत्यु न हो गई ।

इस कार्यवाही में हवलदार लखमी चन्द ने अनुकरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

3. 2950602 सिपाही गोकल सिंह,
राजपूत ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 सितम्बर, 1967)

13 सितम्बर 1967 को सिपाही गोकल सिंह रिकायललैस गन की टुकड़ी के सदस्य थे जिसे नाथूला में दक्षिणी किनारे पर चीनी बंकरों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था । अपनी स्थिति पर भारी आर्टिलरी तथा मार्टर गोलाबारी के बावजूद उन्होंने 6 चीनी बंकरों पर गोलाबारी की और उन्हें नष्ट किया । पहले बंकर पर गोलाबारी करते समय गोली से वह बाईं आंख, दाहिने हाथ तथा जांघ में जख्मी हो गये जिनसे बहुत खून बह रहा था । वह दिलेरी से चीनी बंकरों पर भिन्न-भिन्न स्थानों से गोलाबारी करते रहे । जब वह तक यह बेहोश न हो गये उन्होंने वहां से निकाले जाने से मना कर दिया ।

इस कार्यवाही में सिपाही गोकल सिंह ने अनुकरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

सं० 26–प्रेज०/68—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी वीरता के लिये "शौर्य चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :

1. 14511 सूबेदार अमर बहादुर राना,
असम राईफल्स ।

पुरस्कार

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 मार्च 1966)

1 मार्च 1966 को लगभग 1450 बजे सूबेदार अमर बहादुर राना को जो मीजो जिले में एक चौकी की कमान कर रहे थे एक पत्र मिला, जिसमें यह चेतावनी दी गई थी कि वह शाम तक उपद्रवियों को चौकी समर्पित कर दें । सूबेदार राना ने तुरन्त सभी उपलब्ध साधनों से रक्षा प्रबन्ध किया । उसी दिन लगभग 1900 बजे करीब 1000 सशस्त्र उपद्रवियों ने स्वचालित हथियारों तथा मार्टरों से चौकी पर आक्रमण कर दिया । भारी विषमताओं के बावजूद उन्होंने अपने साथियों का उत्साह बढ़ाते हुए उनके स्थानों पर जाकर उन्हें लड़ने के लिए प्रेरित किया । 45 घंटे तक पीने तथा खाना बनाने के लिए पानी के न मिलने पर भी उनकी प्लाटून 4 मार्च 1966 तक उपद्रवियों से लड़ती रही, तभी पानी उपलब्ध हुआ और गोलाबारूद भी पहुंच गया । अन्ततः उन्होंने उपद्रवियों के चौकी पर कब्जा करने के प्रयत्न को उस समय तक रोके रखा जब 12 मार्च 1966 को कुमुक पहुंच गई ।

2. फ्लाइट लेफ्टिनेंट राजेन्द्र नारायण पान्डेय,
(7676), जी० डी० (पी०) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 मार्च 1966)

3 मार्च, 1966 को मीजो जिले के मुख्यालय ऐजल को उपद्रवियों ने घेर लिया इसलिये यह आवश्यक हो गया कि कि वहां पर पर कुमुक भेजी जाये । इसके बावजूद कि उपद्रवी ऐजल अवतरण पट्टी के बिल्कुल निकट अपनी स्थिति बनाये हुए थे । तथा सभी पुलों को तोड़ दिया गया था और यह जानते हुए कि उनके हेलीकाप्टर उपद्रवियों का आसानी से निशाना बन सकते हैं, फ्लाइट लेफ्टिनेंट राजेन्द्र नारायण पान्डेय ने सैनिकों को ले जाने के लिए हेलीकोप्टर दल का नेतृत्व किया । ऐजल पर पहुंचने पर एक हेलीकाप्टर उपद्रवियों की गोली का निशाना बना जिसके कारण उन्हें वापस बुला लिया गया । दूसरे दिन उन्होंने फिर उड़ान भरी और सैनिकों को ऐजल में उतार दिया जिससे संग्राम का उपद्रवियों के खिलाफ पासा बदल गया । उस समय से वह उस क्षेत्र में सैनिकों तथा उपस्करों का विमान-वाहन करने तथा हताहतों और नागरिकों को वहां से ले जाने के लिए सक्रिय उड़ानें करने के कार्य में लगे हुए हैं ।

इस कार्य में फ्लाइट लेफ्टिनेंट राजेन्द्र नारायण पान्डेय ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

3. 17963 राईफलमैन बीर बहादुर गुरुंग,
असम राईफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 मार्च 1966)

8 मार्च, 1966 को राईफलमैन बीर बहादुर गुरुंग मीजो जिले के एक गांव में टोह गश्ती ड्यूटी पर थे जहां 100 सशस्त्र उपद्रवियों के छिपने की सूचना मिली थी । उपद्रवियों ने पास ही ऊंचाई पर बनी अपनी स्थितियों से गश्ती टुकड़ी पर गोली चलाना आरम्भ कर दिया । अपनी सुरक्षा की परवाह न कर, राईफलमैन गुरुंग आगे बढ़े और उपद्रवियों की स्थिति पर धावा बोला तथा एक भरी हुई राईफल छीन ली और उन में से एक को मार गिराया । यद्यपि मुठभेड़ में वह बुरी तरह घायल हो गये थे तथापि उन्होंने अकेले ही 6 अन्य उपद्रवियों को मार गिराया ।

इस कार्यवाही में राफलमैन बीर बहादुर गुरुंग ने साहस तथा उच्च कोटि के दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

4. 17551 राईफलमैन हरका बहादुर दमाई,
असम राईफल्स ।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 मार्च, 1966

9 मार्च, 1966 को 500 सशस्त्र उपद्रवियों ने मीजो जिले में एक चौकी के चारों ओर के ऊंचे स्थानों पर अधिकार कर लिया तथा राईफलों और हल्की मशीन गनों से गोलाबारी करना आरम्भ कर दिया । वे लगातार 10 और 11 मार्च, 1966 को सही और केन्द्रित गोलाबारी करते रहे। 11 मार्च, 1966 को लगभग 1600 बजे चौकी कमाण्डर ने एक सेक्शन को जिसमें राईफलमैन हरका बहादुर दमाई भी शामिल थे, उपद्रवियों के बंकरों को नष्ट करने का आदेश दिया । राईफलमैन हरका बहादुर दमाई एक बंकर के बिल्कुल समीप घसिट कर गये और उसे हथगोले से उड़ा दिया । जब अचानक दूसरी ओर से उपद्रवियों की गोलाबारी हुई तो उन्होंने अकेले ही उन पर धावा बोला और इनमें से दो को मार गिराया । मुठभेड़ में बुरी तरह घायल होने पर भी राईफलमैन हरका बहादुर दमाई ने कुल चार उपद्रवी मारे तथा कुछ उपस्कर लेकर अपनी चौकी पर लौट आये ।

इस कार्यवाही में राईफलमैन हरका बहादुर दमाई ने साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

5. श्री शिव प्रसाद,
जनरल मैनेजर, आर्डिनेंस फैक्टरी,
भुसावल ।

पुरस्कार की प्रभावी तिथी—2 मई, 1966

2 मई, 1966 को रेलवे माल यार्ड, भुसावल में विस्फोट हो गया था जिससे 12 रेलवे कर्मचारी मारे गये तथा दूसरे बहुत से घायल हो गये थे । घटना की सूचना पाकर श्री शिव प्रसाद, जनरल मैनेजर, आर्डिनेंस फैक्टरी, भुसावल तुरन्त घटनास्थल पर पहुंचे तथा बड़े जोखिम को उठाकर आग बुझाने के कार्य को सम्भाला । आग बुझाने की संक्रिया का संचालन करते समय वह विस्फोट-स्थल के करीब खड़े हुए और उनकी पहल-शक्ति से ही आग विस्फोटकों से भरे हुए वैगनों तक नहीं पहुंच सकी जिससे और अधिक क्षति नहीं होने पाई ।

श्री शिव प्रसाद ने अपनी सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा कर साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया ।

6. जे० सी० 15858 सूबेदार मोहनलाल
कुमाऊं रेजिमेंट ।

पुरस्कार की प्रभावी तिथी—6 जून, 1966

6 जून, 1966 की रात्रि को लगभग 10 डाकुओं ने मध्य प्रदेश के खदिया बीहड़ ग्राम में श्री पन्ना लाल के घर पर धावा बोला तथा श्री धनी राम के 9 साल के पुत्र श्री सीता राम को उठा ले जाने का प्रयत्न किया । बालक के पिता ने डाकुओं को वैसा करने से रोकने का प्रयत्न किया किन्तु डाकुओं ने उस पर गोली चला दी जिससे वह घायल हो गया । सूबेदार मोहन लाल जो छुट्टी पर थे तथा समीप ही रहते थे, उनकी सहायता के लिए आए । वे तुरन्त अकेले ही एक सशस्त्र डाकू से भिड़ गये तथा बालक को छुड़ा कर डाकू से बन्दूक छीनने का प्रयत्न किया । उनके ऐसा करते समय दूसरे डाकुओं ने उन पर गोली चला दी जिससे वे बुरी तरह घायल हो गये और वहीं पर गिर पड़े । अन्ततः डाकू बालक को लेकर भाग गये ।

इस कार्यवाही में सूबेदार मोहन लाल ने सराहनीय साहस का परिचय दिया ।

7. 13718188 हवलदार सेवा सिंह,
जम्मू तथा काश्मीर राईफल्स ।

पुरस्कार की प्रभावी तिथी—30 अगस्त, 1966

30 अगस्त, 1966 को हाई आल्टीचूड वारफेयर स्कूल, जम्मू तथा कश्मीर में एक ग्लेशियर ट्रेनिंग कोर्स के समय एक "रस्सी" जिसके साथ 4 अफसर तथा एक जे० सी० ओ० बंधा था और जिसका नेतृत्व एक हवलदार प्रशिक्षक कर रहे थे, 200 फुट की गहराई की एक हिम-दरार में गिर गई । हवलदार प्रशिक्षक सेवा सिंह ने, जो प्रशिक्षणार्थियों के एक दूसरे दल का नेतृत्व कर रहे थे, यह घटना घटते देखी तथा तुरन्त अपने को रस्सी से अलग कर हिम-दरार पर पहुंचे जहां उन्होंने सहायता के लिए चिल्लाने की की आवाजें सुनी । वे हिम-दरार में उतर पड़े और तह पर पहुंच कर दो अफसरों को जीवित पाया जो सचेत थे । उन्होंने उनको बचाव रस्सियों से बांध दिया और उनको ऊपर खींचने के लिए आदेश दिये । अत्यधिक शीत तथा खुलाव होने पर भी उन्होंने उस समय तक बचाव प्रयत्न जारी रखे जब तक कि दोनों अफसरों को ऊपर न भेज दिया जिससे उनकी जान बच सकी ।

इस कार्यवाही में हवलदार सेवा सिंह ने साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया ।

8. 4435751 लांस हवलदार पियारा सिंह,
सिख लाइट इन्फैन्टरी । **(मरणोपरान्त)**

पुरस्कार की प्रभावी तिथी—25 दिसम्बर, 1966

25 दिसम्बर, 1966 को लांस हवलदार पियारा सिंह एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे मणिपुर में उपद्रवियों के कैम्प पर आक्रमण करने और उसे नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था । जब वे कैम्प के एक भाग पर आक्रमण कर रहे थे तो उनका प्लाटून उपद्रवियों की भारी एल० एम० जी० फायर के मध्य आ गया । लांस हवलदार पियारा सिंह एक पार्श्व से आगे बढ़े और उपद्रवी पार्टी पर धावा बोला । ऐसा करते समय उनकी छाती पर गोलियां लगीं । अविचलित, वह उपद्रवियों की एल० एम० जी० पर लपके और उसे चलाने वाले उपद्रवी को मार गिराया, परन्तु उसके बाद घावों के कारण शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गयी ।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार पियारा सिंह ने साहस तथा उच्चकोटि के दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

9. 4442303 सिपाही सुरजीत सिंह,
सिख लाइट इन्फैन्टरी । **(मरणोपरान्त)**

पुरस्कार की प्रभावी तिथी—25 दिसम्बर, 1966

25 दिसम्बर, 1966 को मणिपुर में उपद्रवी कैम्प पर अपनी कम्पनी के आक्रमण के दौरान सिपाही सुरजीत सिंह अपने सेक्शन

की एल० एम० जी० टुकड़ी के नेता थे। जब उनकी कम्पनी ने लक्ष्य पर कब्जा कर लिया तो वह भाग जो इनके अधिकार में था उपद्रवियों की भारी गोलाबारी के मध्य आ गया। कुछ समय तक उन्होंने जबाबी गोलाबारी की और इसके पश्चात स्वयं उपद्रवी एल० एम० जी० पर धावा बोलने का निश्चय किया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण उपेक्षा कर वे एल० एम० जी० स्थिति की तरफ बढ़े और उपद्रवी गनर को मार गिराया। इस के साथ ही दूसरी उपद्रवी एल० एम० जी० से उनके पेट में गोली लगी। घायल होने पर भी वह उस समय तक अपनी एल० एम० जी० से उपद्रवियों पर गोलाबारी करते रहे जब तक सेक्शन के बाकी लोग उन तक न पहुंच गये।

इस कार्यवाही में सिपाही सुरजीत सिंह ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

10. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मोहम्मद रज़ा शिराज़ी, (7705), जी० डी० (पी)।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—31 जनवरी, 1967

31 जनवरी, 1967 को सर्विस करते समय एक वायुयान के इंधन में आग लग गई। सर्विस करने वाले एयरमेनों ने खतरे का संकेत दिया तथा आग बुझाने का कार्य तुरन्त आरम्भ हो गया। फ्लाइट लेफ्टिनेंट मोहम्मद रज़ा शिराज़ी उन आदमियों से जा मिले जो आग बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे और इस काम में वे सब से आगे रहे। वे बड़ा जोखिम उठाकर जलते हुए वायुयान के मुख्य प्लेन पर चढ़ गये तथा आग बुझाने वाली होज की टोंटी को प्लेनम चेम्बर में डाल दिया। इस सामयिक कार्यवाही ने आग को आगे बढ़ने से रोक दिया जो यदि शान्त न होती तो सम्पूर्ण वायुयान को नष्ट कर देती।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट मोहम्मद रज़ा शिराज़ी ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

11. 202852 सार्जेंट सेनी डेसिंह देवराजन, ए० एफ० एस० ओ०।

परस्कार की प्रभावी तिथि—3 फरवरी, 1967

3 फरवरी, 1967 को दो फ्लाइट कैडटों को एक परिवहन प्रशिक्षण विंग ने डकोटा वायुयान से अवतरण का अभ्यास करने का कार्य दिया गया था। ड्यूटी पर तैनात ध्वंस कर्मीदल के प्रभारी एन० सी० ओ० सार्जेंट सेनी डेसिंह देवराजन ने देखा कि उड़ान भरने की दौड़ में वायुयान दौड़ पथ से इधर-उधर जा रहा है। वायुयान के ध्वस्त हो जाने की सम्भावना का अनुमान कर उन्होंने अपने कर्मीदल को आगाह किया और उस स्थान पर तुरन्त पहुंच गये। वायुयान के दोनों इंजन गिर गये थे तथा उनमें से एक, जिस में आग लग गई थी, वायुयान के बिल्कुल पास था। अपनी सुरक्षा की परवाह न कर सार्जेंट देवराजन ध्वस्त वायुयान में दाखिल हुए। वायुयान का सामने का भाग बिल्कुल टूट गया था तथा दोनों फ्लाइंग कैडट अपनी सीटों पर फंस गये थे। उन्होंने एक और एयरमैन की सहायता से बड़ी सावधानी के साथ मिनटों में दोनों कैडटों को वायुयान से निकाला। उनकी सामयिक कार्यवाही से ही एक कैडट की जान बच सकी दूसरे कैडट की चोटों के कारण मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में सार्जेंट में सेनी डेसिंह देवराजन ने धैर्यपूर्ण साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

12. 191514 नायक (रेडियो औपरेटर) अरबिन्द्र होम चौधरी, असम राईफल्स।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 फरवरी, 1967

नायक अरबिन्द्र होम चौधरी मीज़ो ज़िले के एक गांव में एक बाहरी चौकी पर तैनात एक प्लाटून में, जिस में एक सूबेदार और 33 जवान थे, रेडियो आपरेटर थे। 7 फरवरी, 1967 को उपद्रवियों द्वारा चौकी घेर ली गई तथा एल० एम० जी० से फायर होने लगा। प्लाटून कमांडर ने उपद्रवियों पर जबाबी हमला करने के लिए अपने साथियों को आदेश दिया। मुठभेड़ में प्लाटून कमांडर तथा 7 जवान मारे गये। और उनमें से 15 जंगल में इधर-उधर हो गये जो चौकी पर न लौट सके। नायक चौधरी ने निर्भीकता से लगातार बटालियन मुख्यालय से रेडियो सम्पर्क बनाये रखा तथा चौकी में इधर-उधर जाकर बाकी बचे सैनिकों को उपद्रवियों के सामने डटे रहने के लिए उस समय तक उत्साहित करते रहे जब तक कुमक न आ गई। उनकी इस कार्यवाही से ही चौकी तथा उसमस्करों का बचना सम्भव हुआ।

इस कार्यवाही में नायक (रेडियो औपरेटर) अरबिन्द्र होम चौधरी ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

13. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मीनू वनिया, (5508), ए एण्ड एस डी। पी जे आई।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 फरवरी, 1967

17 फरवरी, 1967 को जब फ्लाइट लेफ्टिनेंट मीनू वनिया पैराटूपिंग साटी पर थे तो वायुयान के कैप्टन ने बताया कि आगे उड़ने वाले वायुयान से कूदते समय एक पैराटूपर फंस गया है। उन्होंने उस पैराटूपर को अवतरण क्षेत्र से साढ़े चार मील दूर गिरते हुए देखा। यह अनुमान लगा कर कि वह वायुयान के धड़ से टकरा कर जख्मी हो गया होगा और उतरने पर और अधिक जख्मी हो जायेगा तथा दुर्गम भूमि में चिकित्सा सहायता नहीं मिलेगी, फ्लाइट लेफ्टिनेंट मीनू वनिया ने अपने कप्तान से कहा कि वह उन्हें उसी क्षेत्र में ही कूदने दें। जब वे पैराटूपर के पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उसकी दाहिनी कलाई से बहुत खून बह रहा है जहां से हाथ अलग हो गया था। उन्होंने उपचार से खून को बन्द कर दिया तथा उस समय तक उसकी देख-भाल करते रहे जब 40 मिनट के बाद चिकित्सा सहायता मिली। यदि वे समय पर मदद न करते तो शायद पैराटूपर की जान न बच सकती।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट मीनू वनिया ने साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

14. 62056 लांस नायक टेक बहादुर मल्ला, असम राईफल्स।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 अप्रैल, 1967

9 अप्रैल, 1967 को लांस नायक टेक बहादुर मल्ला एक गश्ती टुकड़ी के आगे वाले स्काउट थे जो मीजो पहाड़ी क्षेत्र के एक गांव में 0430 बजे पहुंची। गांव के निकट पहुंचने पर उन्होंने एक उपद्रवी सन्तरी को एक मकान के द्वार पर देखा। उपद्रवी ने शीघ्रता से उनकी ओर निशाना साधा, किन्तु इससे पहले कि वह गोली चलाता,

लांस नायक मल्ला ने एक गोली चलाकर उसे उसी स्थान पर मार गिराया । नौ सशस्त्र उपद्रवियों का दल जो गांव में कैम्प लगाये हुए था भिन्न-भिन्न दिशाओं में भागने लगा । लांस नायक मल्ला ने अपनी गश्त से एक एल० एम० जी० ली और उपद्रवियों का पीछा किया तथा उचित दूरी से गोली चलाकर उनमें से दो को मार गिराया और बहुत से अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद तथा उपस्कर पर कब्जा कर लिया ।

इस कार्यवाही में लांस नायक टेक बहादुर मल्ला ने साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

15. कप्तान दिवान चन्द (ई० सी०–51767),
असम राईफल्स।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि–4 जून 1967

4 जून, 1967 को यह सूचना मिलने पर कि 70 सशस्त्र उपद्रवी मीजो पहाड़ियों के एक गांव के पास जंगल में हैं, कप्तान दिवान चन्द ने एक सुरक्षा गश्ती दल का नेतृत्व किया । जब गश्ती दल गांव के निकट पहुंचा तो उपद्रवियों ने एक प्रमुख स्थिति से दोनों ओर से प्लाटून पर एल० एम० जी० से गोलियां चलाना आरम्भ कर दिया । उन्होंने तुरन्त ही 2 इन्च मार्टर से आवरक गोलियां चलाने का आदेश दिया और स्वयं उपद्रवियों की स्थितियों पर आक्रमण करने का नेतृत्व किया । उनकी दाईं टांग में तीन एल० एम० जी० की गोलियां लगीं जिससे तेजी से खून बहने लगा । निर्भयता पूर्वक उन्होंने अपने दल का नेतृत्व जारी रखा किन्तु इसके पूर्व कि वह लक्ष्य पर पहुंचते उनके पेट में गोली लगी । इसके बावजूद उन्होंने दल का नेतृत्व किया और उपद्रवियों की स्थितियों पर आक्रमण कर लक्ष्य पर पहुंचे । उनकी इस वीरतापूर्ण कार्यवाही से उपद्रवी निरुत्साह हो गये और जंगल में भाग गये । इस मुठभेड़ में तीन उपद्रवी मारे गये तथा सोलह घायल हो गये ।

इस पूरी कार्यवाही में कप्तान दिवान चन्द ने साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

नागेन्द्र सिंह, राष्ट्रपति के सचिव

समाज कल्याण विभाग

नई दिल्ली–1, दिनांक 25 मार्च 1968

सं० एफ० 8–12/66 एस० डब्ल्यू–3—समाज कल्याण विभाग के दिनांक 18 सितम्बर, 1967 के संकल्प संख्या एफ० 8–12/66 एस० डब्ल्यू––3 और दिनांक 23 नवम्बर, 1967 की अधिसूचना संख्या एफ० 8-12-66 एस० डब्ल्यू–3 का संशोधन करते हुए भारत सरकार नीचे बताए गये व्यक्तियों को बाल कल्याण सम्बन्धी समिति के सदस्य सहर्ष नामजद करती है ।

1. श्रीमती अली जहीर,
अध्यक्षा, केन्द्रीय समाज कल्याण, बोर्ड,
बोर्ड के प्रतिनिधि के रूप में,
श्रीमती मासूमा बेगम की जगह;

2. श्रीमती म्यूरियल वासी,
उप-शिक्षा-सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय,
उस मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में,
डा० एस० एम० एस० चारी की जगह ;

3. डा० एन० पी० जैन,
निदेशक (सामाजिक शिक्षा), खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालय (सामुदायिक विकास विभाग) उस विभाग के प्रतिनिधि के रूप में, श्री टी० आर० सतीश चन्द्रन की जगह ।

बी० एस० रामदास, उप-सचिव

औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्रालय
(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 25 मार्च 1968

संकल्प

सं० एल० ई० आई० (ए) 3 (1)/66—भूतपूर्व उद्योग मंत्रालय के संकल्प संख्या एल० ई० आई० (ए)—3 (1)/66 दिनांक 26 अक्तूबर, 1966 को जारी रखते हुए और भूतपूर्व उद्योग तथा सम्भरण मंत्रालय के संकल्प सं० एल० ई० आई० (ए) –3 (4)/64 दिनांक 17–9–1965 के साथ पढ़ते हुए, भारत सरकार ने यंत्रों के लिए गठित नामिका की रचना में निम्न-लिखित परिवर्तन करने का निश्चय किया है :

1. ब्रिगेडियर बी० जे० साहनी, प्रबन्धक निदेशक, इन्स्ट्रूमेंटेशन लि०, कोटा-झालावाड़ रोड, कोटा–5 (राजस्थान) ।	सदस्य श्री ए० आर० रवि वर्मा के स्थान पर
2. श्री पी० गंगा रेड्डी, सदस्य, लोक सभा, नई दिल्ली ।	सदस्य श्री पी० आर० राम-कृष्णन के स्थान पर ।

आदेश

आदेश दिया गया कि संकल्प की एक-एक प्रति सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को भेजी जाए तथा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

डी० आर० सुन्दरम, संयुक्त सचिव

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय
(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 20 मार्च 1968

संकल्प

सं० 25-5/67-एल० डी० 1(i)—खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय (कृषि विभाग) के संकल्प संख्या 25-5/67-एल० डी० 1 दिनांक 29 जून, 1967, एवं संकल्प संख्या 25-5/67-एल० डी० 1 दिनांक 20 दिसम्बर, 1967 में आंशिक संशोधन करते हुये गोरक्षा समिति की भारत सरकार को रिपोर्ट देने की समय सीमा 29-3-1968 से तीन मास की अवधि के लिये और बढ़ा दी गई है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की प्रति निम्न को भेजी जाये :—

1. सब राज्य सरकारें/संघ क्षेत्र ।
2. लोक सभा सचिवालय ।

3. राज्य सभा सचिवालय ।
4. प्रधान मंत्री सचिवालय ।
5. मंत्रिमंडल सचिवालय ।
6. अध्यक्ष, गोरक्षा समिति, नई दिल्ली ।
7. सचिव, गोरक्षा समिति ।
8. गोरक्षा समिति के समस्त सदस्य ।
9. सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति ।
10. केन्द्रीय गो संवर्धन परिषद, नई दिल्ली-11 ।
11. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सर्व साधारण की जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित की जाये ।

संकल्प

सं० 25-5/67-एल० डी० 1 (ii)—खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय (कृषि विभाग) के संकल्प संख्या 25-5/67-एल० डी० 1 दिनांक 12 सितम्बर, 1967 में आंशिक संशोधन करते हुए श्री गोविन्द नारायण सिंह, मुख्य मंत्री, मध्यप्रदेश के स्थान पर श्री ब्रजलाल वर्मा, मंत्री सिंचाई, मध्यप्रदेश को गोरक्षा समिति का सदस्य नियुक्त किया जाता है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति निम्न को भेजी जाये:—

1. श्री ब्रजलाल वर्मा, मंत्री, सिंचाई, मध्यप्रदेश, भोपाल । 2. समस्त राज्य सरकारें/संघ क्षेत्र, 3. लोक सभा सचिवालय, 4. राज्य सभा सचिवालय, 5. प्रधान मंत्री सचिवालय, 6. मन्त्री मंडल सचिवालय, 7. अध्यक्ष, गोरक्षा समिति, नई दिल्ली, 8. गोरक्षा समिति के समस्त सदस्य, 9. सचिव गोरक्षा समिति, 10. सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति, 11. केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद्, नई दिल्ली-11, 12. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सर्व-साधारण की जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित की जावे ।

एस० जे० मजुमदार, अतिरिक्त सचिव

शिक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 मार्च 1968

सं० 2-8/67—एन० सी० ई० आर० टी०—शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् की संस्था के शासन के अनुच्छेद 6 के अनुसार भारत सरकार को सौंपे गए अधिकारों का प्रयोग करते हुए सरकार ने परिषद् के काम और प्रगति के पुनरीक्षण के लिए एक समिति नियुक्त की है । समिति के विचारार्थ सौंपे गए विषय और उसकी संरचना निम्नलिखित होगी ।

(क) विचारार्थ विषय

(क) 'शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् के कार्यकलापों की प्रगति विशेषत: शैक्षिक अनुसन्धान और विकास कार्यक्रमों, अध्यापकों, अध्यापक-शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों का सेवापूर्व और सेवा में रहते हुए प्रशिक्षण और बुनियादी और माध्यमिक विद्यालयों के लिए विस्तार से सेवाओं के संदर्भ में पुनरीक्षण करनी;

(ख) परिषद् के कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना—सामान्य रू से शिक्षा की समस्याओं पर उसका क्या प्रभाव पड़ा है और विशेष रूप से पाठ्यचर्या विकास, पाठ्य-पुस्तकों, परीक्षा सुधार, विज्ञान शिक्षण जैसे बड़े कार्यक्रम राज्यों में विद्यालय शिक्षा की कोटि और स्तर को सुधारने में किस हद तक सफल हुए हैं;

(ग) शिक्षा के प्रादेशिक कालिजों की प्रगति का पुनरीक्षण करना और इस बात का मूल्यांकन करना कि उनके द्वारा चलाए गए सहवर्ती पाठ्यक्रम, विज्ञान प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और अन्य क्षेत्रों में अध्यापक-शिक्षण को सुधारने म किस सीमा तक योग दे रहे हैं;

(घ) परिषद् के अन्तर्गत एककों/संस्थाओं के संगठनात्मक, प्रशासनिक और शैक्षिक गठन के पुनर्गठन के लिए सिफारिशों के साथ ही भारत की शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में परिषद् के भावी विकास के लिए सामान्य मार्गदर्शन-रूप रेखा तैयार करना ;

(ङ) परिषद् के विकास के लिए आगामी पांच-दस वर्षों में आवश्यक वित्तीय व्यवस्थाओं का सामान्य पूर्वानमान तैयार करना ;

(च) परिषद् के वर्तमान और भावी कार्य के किसी अन्य पहलू पर जो कि भारतीय शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हो, रिपोर्ट दना ।

(ख) संरचना

1. डा० बी० डी० नागचौधरी, अध्यक्ष
   सदस्य (शिक्षा) प्रायोजना आयोग
2. श्री पी० एन० कृपाल,
   शिक्षा सलाहकार और सचिव,
   भारत सरकार ।
3. श्री ए० ई० टी० बरी, संसद सदस्य ।
4. प्रो० एन० वी० सुब्बा राव,
   प्रोफेसर आफ कैमिस्ट्री,
   प्रधानाचार्य, विज्ञान का विश्वविद्यालय कालिज,
   उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद ।
5. श्री एल० एस० चन्द्रकान्त,
   संयुक्त शिक्षा सलाहकार,
   भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय ।
6. डा० एम० एस० गोरे,
   निदेशक,
   टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज,
   बम्बई ।
7. श्री जे० पी० नायक,
   सलाहकार,
   शिक्षा मंत्रालय ।
8. डा० वी० जो० भिडे,
   राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला,
   नई दिल्ली ।
9. डा० एस० के० मित्रा,
   संयुक्त निदेशक,
   शैक्षिक अनुसन्धान और
   प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् । सचिव

एस० पी० जैन, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1968

No. 20-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the Param Vishisht Seva Medal to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

Lieutenant General AMARENDRA KRISHNA DEY, (MR-135), Medical.

Major General SATYA PAUL VOHRA, (IC-609), E.M.E.

Rear Admiral SOURENDRA NATH KOHLI, Indian Navy.

Air Vice Marshal SHIDEV SINGH, (1595), GD (P).

Air Vice Marshal OM PRAKASH MEHRA, (1639), GD (P).

No. 21-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the Ati Vishisht Seva Medal to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

Surgeon Commodore HARCHARAN LAL BHATIA, MC, Indian Navy.

Air Commodore MADHUKAR MALLANNAH SHRINAGESH, (1665), Medical.

Air Commodore CHAMAN LAL MEHTA, (1630), Administrative and Special Duties.

Air Commodore MADHUKAR LAXMAN AKUT, (1752), GD (N).

Air Commodore CHARANDAS GURUDAS DEVASHER, (1867), GD (P).

Captain HOMI DINSHAW KAPADIA, Indian Navy.

Lieutenant Colonel RAM PRAKASH GAUTAM, (IC-6357), Dogra.

Commander BENEDICT LOBO, Indian Navy.

Surgeon Commander AKUL JAYACHANDRAN, Indian Navy.

Commander APPUSWAMY KRISHNA MURTHY (E), Indian Navy.

Acting Commander KOTTAYIL NANUKUTAN NAIR, Indian Navy.

No. 22-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the Vishisht Seva Medal to the undermentioned personnel for distinguished service of a high order :—

Colonel EDWARD D'SA, (IC-3122), Engineers.

Wing Commander GANENDRA MUKHERJI, (3781), Technical Engineer.

Major BAKSHI KRISHAN NATH CHIBBER, (IC-8155), Gorkha Rifles.

Major NURANI HARIHARA IYER NARAYAN, (IC-6884), Madras.

Lieutenant Commander SHENCOTTAH VENKTESWAR MAHADEVAN, Indian Navy.

Squadron Leader SUBBIAH MURUGAN, (5252), Technical/Signals.

Squadron Leader CHITTEILEMCHERRY PATHIYIL KARUNAKARAN MENON, (5350), Technical/Signals.

Captain PARAMATMA CHAND MURLIMANOHARMAL MEHTA, (M-30550), A.M.C.

Lieutenant SURENDRA PRASAD SINHA, Indian Navy.

Flight Lieutenant ARVIND RUTUPARNA VAIDYA, (6581), Technical/Armament.

JC-31092 Subedar Major MAHESH CHAND, Intelligence Corps.

Chief Petty Officer KUZHIMATTIL KALATHIL MOHAMMED, Telegraphist (O. No. 29586).

JC-13608 Subedar MOHIDEEN SHARRIF, A.S.C.

3517 Flight Sergeant PISHORI LAL, Elect. I

25871 Flight Sergeant JACOB JOHN, Fitter I.

203471 Sergeant JYOTIRMAY NEOGI, F II A.

204631 Cergeant BALDEV SINGH PLAHA, F II E.

209057 Sergeant TIPUVANNAMALAI SRINIVASA GOPALAKRISHNA, Electrical I.

400407 Sergeant RAMAKRISHNA JANKIRAM GOSAWI, FIT II A.

No. 23-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of conspicuous gallantry to :—

1. Lieutenant Colonel RAI SINGH (IC-5086), Grenadiers.

(*Effective date of award—11th September* 1967)

On the 20th August 1967, Lieutenant Colonel Rai Singh, who was commanding a unit at border out-post at Nathu La, was ordered to construct a wire fence along the watershed at Nathu Lal, after the first Chinese intrusion at North Shoulder. Against determined Chinese resistance and inspite of use of physical force by them, he successfully completed the task assigned to him. On 7th September 1967, he was ordered to extended the wire fence along the watershed from North Shoulder to South Shoulder. This time the Chinese soldiers fired a few shots also. Bayonets and rifle butts were freely used and in the scuffle Lieutenant Colonel Rai Singh was injured. Undaunted, he carried out his task successfully. Notwithstanding this fencing, the Chinese soldiers persisted in violating the Indian border. At 0530 hours on 11th September 1967, when Lieutenant Colonel Rai Singh and his men were strengthening the wire to prevent trespassing, the Chinese soldiers suddenly opened fire with artillery, mortars and recoilless guns. The troops under the command of Lieutenant Colonel Rai Singh retaliated with all available weapons. He himself opened LMG fire on the Chinese bunker and also gave covering fire to his own troops on the wire to allow them to get back. When his own bunker was damaged, he came out in the open, and finding that a soldier with a strim grenade had been wounded and was unable to fire, picked up his weapon and engaged the Chinese soldiers. When he found that one of the Browing Machine Guns was engaged by the Chinese force and the Crew Commander had been killed, he immediately took charge of the gun, but hardly had he fired a few bursts when he was hit in the stomach and collapsed on the spot. Although he was hit again in the back of his head by a splinter when he was being evacuated, he continued to give directions and exhorted his men to keep on fighting.

In this action, Lieutenant Colonel Rai Singh displayed conspicuous gallantry and leadership of a high order.

2. Major HARBHAJAN SINGH (IC-14655), Rajput (*Posthumous*)

(*Effective date of award—11th September* 1967)

At 0540 hours on 11th September 1967, Major Harbhajan Singh was commanding a company which was detailed as a protection party for engineers who were constructing a wire obstacle at North Shoulder at Nathu La. When the wire was being laid, a scuffle took place with the Chinese force. Suddenly the Chinese soldiers opened fire from the front as well as from both the flanks. Realising that his company and the engineers had been caught in the open, he shouted to his men to charge the attacking force. After bayonetting three Chinese soldiers, he moved forward and silenced their LMG, which was firing on the men in the open, by throwing a hand-grenade. In doing so, he made the supreme sacrifice of his life.

In this action, Major Harbhajan Singh displayed conspicuous gallantry and determination of a high order.

No. 24-*Pres.*/68.—The President is pleased to approve the award of the KIRTI CHAKRA for acts of conspicuous gallantry to :—

231479 Corporal SUKUMAR GHOSH,

Safety Equipment Worker II.

(*Effective date of award—9th November* 1966)

On the 9th November 1966, at about 1030 hours, an operational fighter trainer aircraft with two pilots on board crashed while making an emergency landing at one of the forward airfields and caught fire. Corporal Sukumar Ghosh, who was

working in the dispersal area at that time, rushed towards the aircraft. When he reached the scene the fire had already started spreading. Unmindful of his personal safety, he first rescued the injured pilot from the burning rear cockpit. He then went forward to the front cockpit, and with the assistance of another airman, successfully unstrapped the semi-unconscious pilot and carried him out of the cockpit. He then went back to the front cockpit to salvage the parachutes out of the burning wreckage. By this time the rear cockpit was fully engulfed by the flames. Despite this, he entered the front cockpit for the second time to salvage the parachutes. It is only when he was ordered by his officers present on the spot to desist from making further efforts that he gave up the attempt most reluctantly.

Throughout, Corporal Sukumar Ghosh displayed exemplary courage and initiative.

No. 25-Pres./68.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry to :—

1. Captain PRITHI SINGH DAGAR (EC-55355), Grenadiers (*Posthumous*)

(*Effective date of award—11th September* 1967)

At 0530 hours on 11th September 1967, Captain Prithi Singh Dagar was detailed as the Officer in charge of a party ordered to strengthen the wire laying party opposite South Shoulder at Nathu La. Soon after the work was started the Chinese engaged in a scuffle with his party, but undaunted, he continued his work. The Chinese soldiers opened fire and he was hit by a rifle bullet in the right hand. Despite his wound, and in the face of MMG fire from the attacking force, he, with the rifle of a dead comrade, killed two Chinese soldiers. Despite all efforts, the Chinese MMG could not be silenced. Finding no other alternative but to make a direct assault, he leapt forward and assaulted the MMG position, and in this action he laid down his life.

In this action, Captain Prithi Singh Dagar displayed exemplary courage and leadership of a high order.

2. 2643527 Havildar LAKHMI CHAND, Grenadiers (*Posthumous*)

(*Effective date of award—11th September* 1967)

Havildar Lakhmi Chand was commanding a Browning Machine Gun Section at South Shoulder at Nathu La on the morning of 11th September 1967 when there was a clash with the Chinese forces. Immediately after the Chinese opened fire, a shell fell on a Browning Machine Gun detachment and wounded all the men including Havildar Lakhmi Chand. Despite profuse bleeding from his right shoulder, he took the Browning Machine Gun to an open flank and continued engaging the attacking force till a burst from the Chinese Medium Machine Gun hit him in the head as a result of which he died on the spot.

In this action, Havildar Lakhmi Chand displayed exemplary courage and determination.

3. 2950602 Sepoy Gokal Singh, Rajput.

(*Effective date of award—13th September* 1967)

On the 13th September 1967, Sepoy Gokal Singh was a member of a detachment of recoilless gun which had been given the task of a destroying the Chinese bunkers on South Shoulder at Nathu La. Despite intense shelling by artillery and mortars on his position, he engaged and destroyed six Chinese bunkers. While engaging the first bunker, he was wounded by a shell in the left eye, right hand and thigh which were bleeding profusely. Undaunted, he continued to engage the Chinese bunkers from different positions. He refused to be evacuated till he fell unconscious.

In this action, Sepoy Gokal Singh displayed exemplary courage and determination.

No. 26-Pres./68.—The President is pleased to approve the award of the SHAURYA CHAKRA for acts of gallantry to :—

1. No. 14511 Subedar AMAR BAHADUR RANA, Assam Rifles.

(*Effective date of award—1st March* 1966)

On the 1st March 1966, at about 1450 hours, Subedar Amar Bahadur Rana, who was commanding a post in the Mizo District, received a letter containing an ultimatum to surrender to the hostiles by the evening. He immediately organised his defences with all his resources. At about 1900 hours the same day, about 1000 armed hostiles attacked the post with automatic weapons and mortar fire. He inspired his men to fight the hostiles despite the heavy odds by encouraging them and visiting their positions. Without water for drinking and cooking for 45 hours, his platoon fought with great courage till 4th March 1966 when the water supply was restored and the stock of ammunition replenished. He succeeded in preventing the hostiles from capturing the post till reinforcements reached it on 12th March 1966.

2. Flight Lieutenant RAJENDRA NARAYAN PANDEYA, (7676), GD (P).

(*Effective date of award—3rd March* 1966)

On 3rd March 1966, Aijal, the headquarters of Mizo District, was surrounded by hostiles and it became essential to rush reinforcements there. Despite the fact that the hostiles had taken up positions very close to Aijal helipad and all bridges had been destroyed, Flight Lieutenant Rajendra Narayan Pandeya lead a force of helicopters to land troops knowing fully well that it would be an easy target for the hostiles' guns. On reaching Aijal, one of the helicopters was hit by hostile fire whereupon they were recalled to base. On the next day, he again took off and landed troops at Aijal which turned the tide of operations against the hostiles. Since then, he had been engaged in active flying in the sector airlifting troops and equipment and evacuating casualties and civilians.

Throughout, Flight Lieutenant Rajendra Narayan Pandeya displayed courage and determination.

3. No. 17963 Rifleman BIR BAHADUR GURUNG, Assam Rifles.

(*Effective date of award—8th March* 1966)

On 8th March 1966, Rifleman Bir Bahadur Gurung was on a reconnaissance patrol to a village in the Mizo District where about 100 armed hostiles were reported to be hiding. The patrol was fired upon from point blank range by the hostiles from high positions occupied by them nearby. Unmindful of his personal safety, Rifleman Gurung rushed forward and attacked the hostiles' position. He snatched away a loaded rifle from one of them and killed him. Although he was seriously wounded in the encounter, he killed six more hostiles single-handed.

In this action, Rifleman Bir Bahadur Gurung displayed courage and determination of a high order.

4. No. 17551 Rifleman HARKA BAHADUR DAMAI, Assam Rifles.

(*Effective date of award—11th March* 1966)

On 9th March 1966 about 500 armed hostiles occupied all the high features around a Post in the Mizo District and had started firing with rifles and Light Machine Guns. The hostiles continued accurate and concentrated fire throughout 10th and 11th March 1966. On 11th March 1966, a Section of which rifleman Harka Bahadur Damai was a member, was detailed by the Post Commander to destroy the hostiles' bunkers. Rifleman Harka Bahadur Damai crawled very close to one of the bunkers and blasted it with hand grenades. When suddenly hostile automatic fire came from another direction, he charged the hostiles single-handed and killed two of them. Although badly wounded in the encounter, Rifleman Harka Bahadur Damai, killed four hostiles in all and captured some arms and crawled back to his post.

In this action, Rifleman Harka Bahadur Damai displayed courage, initiative and determination.

5. Shri SHIVA PRASAD, General Manager, Ordnance Factory, Bhusawal.

(*Effective date of award—2nd May* 1966)

On 2nd May 1966 there was an explosion in the railway goods yard in Bhusawal which resulted in the death of twelve Railway employees and injuries to several others. Shri Shiva Prasad, General Manager, Ordnance Factory, Bhusawal, on coming to know about the accident, immediately rushed to the scene and took charge of the fire fighting arrangements at great personal risk. He stood close to the area of explosion while directing the operations and by his initiative prevented the fire from spreading to the railway wagons containing explosives and thereby preventing further damage.

Shri Shiva Prasad displayed courage and initiative in complete disregard of his personal safety.

6. JC-15858 Subedar MOHAN LAL,
Kumaon Regiment.

(*Effective date of award—6th June* 1966)

On the night of 6th June 1966, a gang of about 10 dacoits raided the house of Shri Panna Lal in village Khadiya Behad in Madhya Pradesh and attempted to kidnap Shri Sita Ram, son of Shri Dhani Ram, aged 9 years. The father of the boy tried to resist, but was fired upon and was injured. Subedar Mohan Lal, who was on leave and was living close by, came to their assistance. He grappled with an armed dacoit single-handed, rescued the boy and tried to snath the rifle from the dacoit. While doing this, he was seriously injured from gun shots by other dacoits and fell on the ground. The boy was eventually kidnapped by the dacoits.

In this action, Subedar Mohan Lal displayed commendable courage.

7. No. 13718188 Havildar SEWA SINGH,
Jammu & Kashmir Rifles.

(*Effective date of award—30th August* 1966)

On 30th August 1966, during the course of glacier training at the High Altitude Warfare School in Jammu and Kashmir, one "rope" consisting of four officers and one JCO led by a Havildar Instructor, fell into a crevasse about 200 feet deep. Havildar Instructor Sewa Singh, who was leading another group of trainees behind, saw this and he immediately unroped himself and rushed to the crevasse from where he heard cries for help. He lowered himself into the crevasse and on reaching the bottom found two officers alive and conscious. He attached the life line to the two officers and called for them to be pulled up. He continued the rescue operation despite extreme cold and exposure till he had sent up both the officers who were ultimately saved.

In this action, Havildar Sewa Singh displayed courage and initiative.

8. No. 4435751 Lance Havildar PIARA SINGH,
Sikh Light Infantry (*Posthumous*)

(*Effective date of award—25th December* 1966)

On 25th December 1966, Lance Havildar Piara Singh was commanding a Platoon which was responsible for attacking and destroying a hostile Camp in Manipur. While assaulting a feature of this Camp, the Platoon came under heavy hostile LMG fire. Lance Havildar Piara Singh moved forward from a flank and charged the hostile party. While doing so, he received a burst of bullets in his chest. Undaunted, he rushed the LMG, and firing from the hip, killed the hostile who was manning it, but immediately thereatfer he succumbed to his injuries.

In this action, Lance Havildar Piara Singh displayed courage and determination of a high order.

9. 444303 Sepoy SURJIT SINGH,
Sikh Light Infantry (*Posthumous*)

(*Effective date of award—25th December* 1966)

Sepoy Surjit Singh was the leader of an LMG group of his Section during a Company attack on a hostile Camp in Manipur on 25th December 1966. After the Company had captured its objective, the portion which he was holding came under intense hostile fire. For some time he returned the fire and thereafter decided to charge the hostile LMG. In complete disregard of his personal safety, he rushed towards the hostile LMG position and killed the gunner. Simultaneously, he received a burst in the stomach from another hostile LMG. Despite his wounds, he continued to engage the hostiles with his LMG till the rest of his Section reached him.

In this action, Sepoy Surjit Singh displayed courage and determination.

10. Flight Lieutenant MOHAMED RAZA SHIRAZI,
(7705), GD (P).

(*Effective date of award—31st January* 1967)

On 31st January 1967, the fuel in an aircraft caught fire during servicing operations. The airmen engaged in servicing raised an alarm and the fire fighting operations were immediately commenced. Flight Lieutenant Mohamed Raza Shirazi joined the group of men trying to extinguish the fire and took a leading part. He climbed on the main-plane of the burning aircraft at great risk and directed the nozzle of the fire fighting hose into the Plenum chamber. This timely action prevented the fire from spreading further which, otherwise, would have engulfed and destroyed the whole aircraft.

Flight Lieutenant Mohamed Raza Shirazi displayed courage and leadership.

11. 202852 Sergeant SENI DESINGH DEVARAJAN,
A.F.S.O.

(*Effective date of award—3rd February* 1967)

On 3rd February 1967, two Flight Cadets were authorised to carry out circuits and landings in a Dakota aircraft at a Transport Training Wing. Sergeant Seni Desingh Devarajan, NCO in charge of the crash crew on duty, saw the aircraft swinging off the runway on its take off run. Anticipating a crash, he alerted his crew and reached the spot immediately. Both the engines of the aircraft had fallen off from the mountings and one of them which was on fire was very near the aircraft. Disregarding his personal safety, Sergeant Devarajan entered the crashed aircraft. The nose section was completely broken and both the flight cadets were trapped in their seats. With great care, he, with the help of another airmen extricated the two cadets from the aircraft within minutes. His prompt action was to a large extent responsible for saving the life of one of the cadets; the other cadet succumbed to his injuries.

In this action, Sergeant Seni Desingh Devarajan displayed cool courage and initiative.

12. No. 191514 Naik Radio Operator ARABINDRA HOME CHOUDHURY, Assam Rifles.

(*Effective date of award—7th February* 1967)

Naik Arabindra Home Choudhury was serving as a Radio Operator with a platoon consisting of a Subedar and 33 ORs which was occupying an outpost in a village in Mizo District. On 7th February 1967, the post was surrounded and fired at by hostile LMGs. The Platoon Commander ordered his men to counter-attack the hostiles. In the encounter the Platoon Commander and seven ORs were killed and 15 of them dispersed in the jungle being unable to return to the post. Naik Choudhury continuously maintained radio communications with the Battalion Headquarters and kept on moving up and down the post encouraging the remaining personnel to engage the hostiles and to put up a stiff resistance till reinforcements arrived. But for him the post would have been over-run and all weapons lost.

In this action, Naik Radio Operator Arabindra Home Choudhury displayed courage and determination.

13. Flight Lieutenant MINOO VANIA,
(5508), A&SD/PJI.

(*Effective date of award—17th February* 1967)

On 17th February 1967, Flight Lieutenant Minoo Vania was on a paratrooping sortie, when he was informed by the Captain of the aircraft that a "hang up" had occurred in the aircraft flying ahead. He saw the dangling paratrooper released about 4½ miles from the dropping zone. Apprehending that the paratrooper was probably injured by being buffetted against the aircraft fuselage and would sustain further injuries during landing and would not get any immediate medical aid because of the inaccessible terrain. Flight Lieutenant Vania requested his Captain to drop him in that area. On landing by parachute, he found the paratrooper bleeding profusely from the right wrist where the hand had been completely severed. He managed to stop bleeding and nursed him till medical assistance became available after about 40 minutes. But for his timely help, the paratrooper would probabaly not have been saved.

Flight Lieutenant Minoo Vania displayed courage and initiative.

14. 62056 Lance Naik TEK BAHADUR MALLA,
Assam Rifles.

(*Effective date of award—9th April* 1967)

On 9th April 1967, Lance Naik Tek Bahadur Malla was the leading scout of a patrol which arrived at a village in the Mizo Hills area at 0430 hours. When close to the village, he saw a hostile sentry at the doorway of a house. The hostile immediately took aim at him but before he could fire, Lance

Naik Malla fired a shot and killed him on the spot. A party of nine armed hostiles who were camping in the village started running in different directions. Lance Naik Malla took a Light Machine Gun from his own patrol and chased the hostiles, and firing from a suitable distance, killed two of them and captured a lot of arms, ammunition and equipment.

In this action, Lance Naik Tek Bahadur Malla displayed courage and determination.

15. Captain DIWAN CHAND (EC-51767), Assam Rifles.

(*Effective date of award—4th June* 1967)

On 4th June 1967, on receiving information that about 70 armed hostiles were somewhere in the jungle near a village in the Mizo Hills, Captain Diwan Chand led a protective patrol. When the patrol approached the village, the entire platoon was subjected to LMG and small arms fire by hostiles from both flanks from a dominating feature. He immediately ordered the 2" Mortar to give covering fire and himself led an assault on the hostiles' positions. He was hit by three bullets of an LMG burst in the right led and was profusely bleeding. Undaunted, he continued leading his men, but just before he reached the objective, he was again hit by a bullet in the stomach. Despite all this, he led his men in a charge on the hostiles' positions and reached the objective. This gallant and brave action completely demoralised the hostiles who fled into the jungle. In the encounter, three hostiles were killed and sixteen were wounded.

Throughout, Captain Diwan Chand displayed courage, initiative and determination.

NAGENDRA SINGH, Secy. to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-1, the 27th March 1968

No. 3(1)*ECI*/67.—In partial modification of Lok Sabha Secretariat Notification No. 3(1)ECI/67 published in Gazette of India, Part I, Section 1, dated the 22nd April, 1967, the term of the Committee on Estimates (1967-68) which was due to expire on the 31st March, 1968 has been extended up to the 30th April, 1968.

B. B. TEWARI, Dy. Secy.

DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE

New Delhi-1, the 25th March 1968

No. F. 8-12/66-*SW*.3.—In modification of the Department of Social Welfare Resolution No. F. 8-12/66-SW.3, dated the 18th September, 1967, and Notification No. F. 8-12/66-SW.3, dated the 23rd November 1967, the Government of India are pleased to nominate the following as members on the Committee on Child Welfare, namely,

1. Shrimati Ali Zaheer, Chairman, Central Social Welfare Board, as the representative of the Board, *vice* Shrimati Masuma Begum;
2. Shrimati Muriel Wasi, Deputy Educational Adviser, Ministry of Education, as the representative of that Ministry, *vice* Dr. S. M. S. Chari;
3. Dr. N. P. Jain, Director (Social Education), Ministry of Food, Agriculture, Community Development & Cooperation (Department of Community Development), as the representative of that Department, *vice* Shri T. R. Satish Chandran.

B. S. RAMDAS, Dy. Secy.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-1, the 22nd March 1968

CORRIGENDUM

No. 4/13/67-*AIS*(*IV*).—In the Ministry of Home Affairs Notification No. 4/13/67-AIS(IV) dated the 2nd February, 1968 published in Part I, Section 1 of the Gazette of India of 3rd February, 1968, the following changes may be effected:

REFERENCE	*FOR*	*READ*
Appendix—IV Page 84, Col. 2, sub-para (b) of para 3 in table 'Height'.	165 cms	163 cms

M. R. BHARDWAJ, Under Secy.

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 27th March 1968

RESOLUTION

No. 1/6/67-*HC*.—The Government of India have decided to nominate the following members of the Parliament, as additional members of the All India Handicrafts Board as reconstituted *vide* this Ministry's resolution No. 1/6/67-HC, dated the 16th September, 1967 and 6th January, 1968 :—

1. Shrimati Anis Kidwai, Member, Rajya Sabha.
2. Chaudhry A. Mohamed, Member, Rajya Sabha.
3. Shri Vidya Dhar Bajpai, Member, Lok Sabha.
4. Shri Musheer Ahmed Khan, Member, Lok Sabha.

2. The term of office of these members of Parliament will be as for other members of the All India Handicrafts Board.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India for general information.

M. C. MINOCHA, Dy. Secy.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Industrial Development)

New Delhi, the 25th March 1968

RESOLUTION

No. LEI(*A*) 3(1)/66.—In continuation of the erstwhile Ministry of Industry Resolution No. LEI(A) 3(1)/66 dated the 26th October, 1966 read with the Ministry of Industry & Supply Resolution No. LEI(A) 3(4)/64 dated the 17th September 1965, the Government of India have decided to make the following changes in the composition of the Panel for Instruments :—

Members

1. Brigadier B. J. Shahaney, Managing Director, Instrumentation Ltd., Kota-Jhalawar Road, Kota-5 (Rajasthan) *vice* Shri A. R. Ravi Varma.
2. Shri P. Ganga Reddy, Member, Lok Sabha, New Delhi *vice* Shri P. R. Ramakrishnan.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned that it be published in the Gazette of India for general information.

D. R. SUNDARAM, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 23rd March 1968

No. F. 8-1/66 *YS*-4.—In continuation of the Ministry of Education Notification of even number dated the 23rd November, 1967 regarding nomination on the Central Advisory Board of Physical Education and Recreation,

Major K. C. Palta,
Assistant Director,
(Cadet Corps & Colleges)
Haryana State,
Chandigarh

is nominated a member of the Central Advisory Board of Physical Education and Recreation with immediate effect and up to the 27th August, 1968 *vice* Shri R. S. Sud.

R. L. ANAND, Under Secy.

New Delhi-1, the 25th March 1968

No. F. 2-8/67-NCERT.—In exercise of the powers vested in the Government of India *vide* Article 6 of the Memorandum of Association of the National Council of Educational Research and Training, the Government are pleased to appoint a committee to review the work and progress of the Council. The terms of reference and composition of the Committee shall be as follows :

(A) *Terms of Reference*

(a) To review the progress of the activities of National Council of Educational Research and Training with particular reference to educational research and development programmes, pre-service and in-service training of teachers, teacher educators and educational administrators, and extension services for elementary and secondary schools;

(b) To evaluate the impact of the Council's programmes on educational problems in general, and in particular, how far major programmes like curriculum development, textbooks, examination reform, science education, etc. are improving the quality and standard of school education in States;

(c) To review the progress of the Regional Colleges of Education and evaluate how far the concurrent courses conducted by them are contributing towards improving teacher-education in Science, Technology, Commerce and other fields;

(d) To lay down broad guidelines for the future development of the Council in relation to India's educational needs, together with recommendations for reorganising the organisational, administrative and academic set-up of the Units/Institutions under the Council;

(e) To prepare a broad estimate of the financial provision needed for the development of the Council in the next five and ten years;

(f) To report on any other aspect of the present and future functioning of the Council that is important to Indian education.

(B) *Composition*

1. Dr. B. D. Nag Chaudhari,
Member (Education),
Planning Commission. *Chairman*
2. Shri P. N. Kirpal,
Educational Adviser and
Secretary to the Government of India.
3. Shri A. E. T. Barrow, M.P.
4. Prof. N. V. Subba Rao,
Professor of Chemistry and
Principal, University College of Science,
Osmania University, Hyderabad.
5. Shri L. S. Chandrakant,
Joint Educational Adviser to the Government of India,
Ministry of Education.
6. Dr. M. S. Gore,
Director,
Tata Institute of Social Sciences,
Bombay.
7. Shri J. P. Naik,
Adviser
Ministry of Education.
8. Dr. V. G. Bhide,
National Physical Laboratory,
New Delhi.
9. Dr. S. K. Mitra,
Joint Director,
National Council of Educational
Research and Training. *Secretary*

S. P. JAIN, Under Secy.

DEPARTMENT OF COMMUNICATIONS

(P. & T. Board)

New Delhi, the 11th March 1968

No. 26/5/67-LI.—In their Resolution No. F. 74-15/55-LI dated the 3rd April, 1957 it was decided by the Government of India that the payment of premiums on the P.L.I. (Whole Life) policies on which premiums were payable throughout the life of the assured would with effect from the 1-4-1957 cease after the insurant attains the age of 85.

2. On further consideration the President is pleased to decide that with effect from the 1st of April 1967 premiums in respect of such policies shall be waived after the attainment by the policy-holder of the age of 80 years or after the payment of premia for full 35 years, whichever is later.

3. Past cases where the policy-holders have prior to 1st April 1967 paid premiums beyond age 80 or for more than 35 years should not be reopened.

S. K. GHOSH, Director, P.L.I. & Complaints

MINISTRY OF LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION

(Department of Labour and Employment)

New Delhi, the 26th March 1968

RESOLUTION

No. LWI(1)17(1)/68.—The term of the Study Group constituted in the Government of India resolution No. LWI(1)-31(1)/66-A dated 17th August, 1967 published in the Gazette of India dated 2nd September, 1967 to undertake a factual study of the working and living conditions of the Railway Porters and Commissioned Vendors, is hereby extended upto 30th November 1968.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be forwarded to :—

(i) All the State Governments.

(ii) Ministry of Railways.

(iii) All India Organisations of Employers and Workers.

(iv) National Federation of Railway Porters and Vendors, Hata Jagdish Prasad, Lokmanganj Charbag, Lucknow.

(v) Members of the Committee.

(vi) Chief Labour Commissioner (Central), New Delhi.

(vii) Director, Labour Bureau, Simla.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. N. CHATTERJEE, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1968